Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

अवध क्षेत्र के निर्माण से संयुक्त प्रान्त के गठन तक उत्तर प्रदेश: एक संक्षिप्त अध्ययन

ऋतु देवी[1] डॉ .रवीन्द्र कुमार वर्मा [2]
[1] (शोध छात्रा) मध्यकालीन इतिहास
रमाबाई राजकीय महिला पी. जी. कॉलेज अकबरपुर अम्बेडकरनगर (उ. प्र.)
[2](असिस्टेंट प्रोफेसर) रमाबाई राजकीय महिला पी. जी. कॉलेज अकबरपुर अम्बेडकरनगर (उ. प्र.)
Email- ravigdc81@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180313
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 75-77
March- 2026
Submitted: 25 Feb. 2026
Revised: 02 Mar. 2026
Accepted: 10 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश :

जो वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के नाम से जाना जाता है वह प्राचीन काल से अवध क्षेत्र के नाम से जाना जाता रहा है इसका इतिहास बहुत पुराना है। ऋग्वेद में अवध को अवध्र (हानिरहित) से सम्बंधित माना जाता है। अथर्ववेद में इसके प्रमुख शहर अयोध्या का प्रथम उल्लेख मिलता है। बौद्धकाल में महात्मा बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश अवध क्षेत्र के श्रावस्ती में दिया था। विभिन्न संत महात्माओं ने अपने उपदेशों से इस क्षेत्र को महिमामंडित किया है। मुगल शासक मुहम्मद शाह रंगीला के समय सआदत खां ने स्वतंत्र अवध राज्य की स्थापना की और विभिन्न नवाबों के समय इसका राजनीतिक और सांस्कृतिक विस्तार हुआ। अंग्रेजों के आगमन के बाद उनकी शोषणकारी नीतियों से अवध क्षेत्र पर काफी बुरा प्रभाव पड़ाद्य इसी क्रम में अवध क्षेत्र के नामों में परिवर्तन होता गया और इसका विस्तार हुआ कभी यह अवध क्षेत्र के नाम से जाना गया तो कभी किसी प्रेसीडेंसी के अधीन रहा और फिर कभी संयुक्त प्रान्त और अंततः यह वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के नाम से जाना जाता है। क्षेत्रफल के अनुसार यह भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है और भारत की सर्वाधिक जनसंख्या उत्तर प्रदेश में निवास करती है।

मुख्य शब्द : अथर्ववेद, बौद्धकाल, उपदेश, सांस्कृतिक, शोषणकारी, हानिरहित, आबादी, प्रेसीडेंसी, जनसंख्या

प्रस्तावना :

अवध एक ऐसा शब्द जिसका न केवल राजनीतिक महत्त्व है वरन् सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व भी है। अवध शब्द अयोध्या का तद्भव रूप माना जाता है। रामायण काल में उत्तर प्रदेश का यह भाग कोशल कहलाता था। दशरथ यहाँ के राजा थे, अयोध्या उनकी राजधानी थी। छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में कोशल भी एक महत्वपूर्ण महाजनपद था और इसकी राजधानी श्रावस्ती थी। बुद्ध के समय कोशल नरेश प्रसेनजित थे जिनका अजातशत्रु के साथ संघर्ष हुआ था। बाद में यह विशाल मगध साम्राज्य का अंग बना लिया गयाद्य आगे यह गुप्त साम्राज्य फिर हर्षवर्धन के साम्राज्य का अंग बना पूर्व मध्य काल में गुर्जर प्रतिहारो के साम्राज्य का भी अंग बना। 1192 में शिहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी के एक सहायक ने अवध को जीत लिया फिर यहाँ मुसलमानों का बसना आरम्भ हुआ। 12वीं शताब्दी में ही अवध पर मुसलमानो का कब्जा हो गया इल्तुतमिश के समय अवध में पिर्थू का विद्रोह हुआ था, जिसे इल्तुतमिश के बेटे मुहम्मद ने दबाया था। अवध के सूबेदार नासिरुद्दीन ने कहा था की उसने(पिर्थू) प्रायः 1,20,000 मुसलमानों का रक्त बहाया था।बलबन के समय उसी के गुलाम सरदार बंगाल के इक्तेदार तुगरिल खां का भयानक विद्रोह हुआ। इस विद्रोह को दबाने के लिए अवध के इक्तादर अमीन खां को भेजा लेकिन यह असफल रहा तो बलबन ने क्रोध में इसे अयोध्या के फाटक पर लटकवा दिया। पंद्रहवी शताब्दी में अवध शब्द का प्रयोग अयोध्या नगर क्षेत्र के लिए न होकर एक विशेष क्षेत्र के सन्दर्भ में होता था, जिसकी राजधानी अयोध्या थी। जब मुगल बादशाह अकबर ने अपने साम्राज्य का पुनर्गठन किया, तो अवध की प्रतिष्ठा के आधार पर ही अवध को एक सूबे के रूप में प्रतिष्ठित किया। वर्तमान अवध क्षेत्र के अंतर्गत अयोध्या, अम्बेडकरनगर, सुल्तानपुर, रायबरेली, उन्नाव, बाराबंकी, लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, बस्ती, आजमगढ़, गोरखपुर, देवरिया, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, गोंडा ,बलरामपुर बहराइच, श्रावस्ती, नेपाल के राप्ती क्षेत्र का अंचल आदि सम्मिलित है। ऐतिहासिक अवध अब उत्तर प्रदेश राज्य का पूर्वोत्तर भाग है। अवध सिन्धु गंगा के मैदान के घनी आबादी वाले क्षेत्र के मध्य में स्थित है और अपनी उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी के लिए जाना जाता है ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अविनाश सिंह ठाकुर, शोधार्थी

How to cite this article:
देवी,.ऋतु .,& वर्मा, . रवीन्द्र . कुमार .(2026).अवध क्षेत्र के निर्माण से संयुक्त प्रान्त के गठन तक उत्तर प्रदेश: एक संक्षिप्त अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(3(A)),75–77. https://doi.org/10.5281/zenodo.19607267

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19607267
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

नवाबों के समय अवध का विकास :

अवध के स्वतंत्र राज्य का संस्थापक सआदत खां 'बुरहान उल मुल्क' था। इसने 1720–1722 तक आगरा के सूबेदार पद पर कार्य किया। 1722 में मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला ने उसे अवध का सुबेदार बनाया। मुहम्मद शाह रंगीला ने उसे बुरहान उल मुल्क की उपाधि प्रदान की थी। सआदत खां ने अपने दामाद सफदरजंग को बादशाह से अपना नायब सूबेदार मनवा लिया। अपने राजवंशीय शासन की स्थापना की ओर उसका दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम था दीवान के पद को शाही नियंत्रण से मुक्त करा लेनाद्य नादिरशाह के आक्रमण के समय सआदत खां ने इस फारसी आक्रमणकारी का साथ दिया लेकिन नादिर के दंभ को झेल न सकाद्य दिल्ली पर नादिर के अधिकार के अगले ही दिन इसने कुंठा और हताशा में विष खा लिया। अपनी मृत्यु के समय तक यह अवध में एक अर्द्ध स्वतंत्र क्षेत्रीय राजनीतिक व्यवस्था विकसित कर चुका था। सआदत खां की मृत्यु के बाद सफदरजंग अवध का नवाब बना नादिरशाह ने सफदरजंग से 2 करोड़ रुपये लिए और अवध में उत्तराधिकार का प्रश्न हल कर दिया। बाद में मुहम्मद शाह रंगीला ने इस नियुक्ति की पुष्टि करके उसे एक शाही उपाधि प्रदान की। 1759 में भगोड़े शहजादे शाहआलम द्वितीय ने अपना राज्याभिषेक कराने के बाद शुजाउद्दौला को अपना वजीर नियुक्त किया। 1761 में मराठों और अफगान अहमद शाह अब्दाली के मध्य पानीपत की तीसरी लड़ाई हुई ,इस समय शुजाउद्दौला ने अब्दाली का साथ दिया।

अवध में अंग्रेजों का हस्तक्षेप :

1763 में मीर कासिम बंगाल से भागकर मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय और अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ गठबंधन बनाने का प्रयास किया। शुजाउद्दौला ने मीरकासिम को समर्थन तभी दिया जब उसने सफलता के बाद बिहार और उसका खजाना, साथ ही 3 करोड़ रुपये देने का वादा किया। लेकिन उनकी संयुक्त सेना भी बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों के सामने टिक नहीं पाई। इस युद्ध के बाद 1765 में इलाहाबाद की संधि हुई, इस संधि के अनुसार शुजाउद्दौला को 50,000 रूपये कम्पनी को देने थे तथा कम्पनी सरकार ने मुगल बादशाह से कड़ा और इलाहाबाद लेकर शुजाउद्दौला को दे दिया। यह भी निश्चय हुआ की आगे नवाब और कम्पनी एक दूसरे के भूभाग की रक्षा करेंगेद्य कम्पनी को अवध से शुल्क मुक्त व्यापार के अधिकार प्राप्त होंगे। इस संधि ने बाद में नए तनाव पैदा किये और अवध के अधिग्रहण की परिस्थिति तैयार की। आसफुद्दौला ने अपनी राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित की। 1773 में लखनऊ दरबार में एक अंग्रेज रेजीडेंट रखकर अवध के विलय की पृष्ठभूमि तैयार कर दी इसे ठोस रूप 1801 में वेलेजली ने दिया। हस्तक्षेप का पहला अवसर 1793 में नवाब आसफुद्दौला की मृत्यु ने दिया। अंग्रेजों ने उसके बेटे के उत्तराधिकार के दावे के मान्यता को इंकार कर दिया तथा नवाब के भाई सआदत अली खां को गद्दी पर बैठा दिया तथा लखनऊ का रेजीडेंसी कार्यालय धीरे–धीरे अवध में सत्ता का एक वैकल्पिक केंद्र बन गया।

1834 में अवध प्रान्त को बंगाल प्रेसीडेंसी से अलग करके एक नई प्रेसीडेंसी बनाई गयी। इस प्रेसीडेंसी का नाम आगरा प्रेसीडेंसी रखा गया और इसे चार्ल्स थियोफिलास मेटकाफ के अधीन रखा गया। 1836 में इस प्रान्त का नाम बदलकर नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज रखा गया और इसे भी मेटकाफ के अधीन रखा गया। 1847 वाजिद अली शाह की ताजपोशी हुई। इस समय लखनऊ कला और संस्कृति का केंद्र बन गया। तत्कालीन गवर्नर जनरल डलहौजी ने जेम्स आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर कुशासन का आरोप लगाकर 7 फरवरी 1856 में इसे अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया तथा इसे जेम्स आउट्रम के अधीन रखा। 1877 में अवध एवं नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज को मिला दिया गया तथा प्रान्त का नाम नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज एंड अवध रखा गया। 15 फरवरी 1877 को लेफ्टिनेंट गवर्नर ऑफ वेस्टर्न प्रोविंसेज एवं चीफ कमिश्नर ऑफ अवध के पदों को एक कर दिया और इस पद पर जार्ज कूपर को नियुक्त किया गया।

1901 की जनगणना के अनुसार ब्रिटिश जिलों की जनसंख्या 47,691,782 तथा देशी रियासतों की जनसंख्या 802,097 थी। शहरी आबादी 11,641 थी, जिसमें लखनऊ में सबसे ज्यादा 2,64,049 नागरिक थे तथा गावों की औसत आबादी 404 थी।

अंग्रेजी शासन काल से उत्तर प्रदेश के विभिन्न नामः

1775–1833	: यह प्रान्त प्रेसीडेंसी ऑफ फोर्ट विलियम (बंगाल) के अधीन था।
1834	: इसे प्रेसीडेंसी ऑफ फोर्ट विलियम से अलग करके इस प्रान्त का नाम आगरा रखा गया और इसका मुख्यालय एवं राजधानी इलाहाबाद को बनाया गया।
1836	: इसका नाम नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज रखा गया और इसकी राजधानी इलाहाबाद से बदलकर आगरा कर दी गयी ।
1856	: अवध अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया गया और चीफ कमिश्नर जेम्स आउट्रम के अधीन रखा गया।
1858	: इस प्रान्त की राजधानी आगरा से बदलकर पुनः इलाहाबाद कर दी गयी द्य
1877	: अवध के जिले नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज में मिला दिए गये और इसका नाम बदलकर नार्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज एंड अवध रखा गया ।
1902	: इसका नाम यूनाइटेड प्रोविंसेज ऑफ आगरा एंड अवध रखा गया ।
1937	: इसका नाम यूनाइटेड प्रोविंसेज रखा गया ।
1949	: यूनाइटेड प्रोविंसेज में रामपुर, टिहरी, गढ़वाल तथा बनारस स्टेट शामिल कर लिए गये।
1950	: इस प्रान्त का नाम 24 जनवरी 1950 को उत्तर प्रदेश रखा गया और लखनऊ इसकी स्थायी राजधानी बनी।
2000	: उत्तर प्रदेश से उत्तरांचल प्रान्त को अलग करके उत्तराखंड राज्य की स्थापना की गयी।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

स्रोत : उत्तर प्रदेश अभिलेखागार

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उत्तर प्रदेश का भौगोलिक विस्तार :

उत्तर प्रदेश का आकार लम्बवत् है और इसका कुल क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किलोमीटर है (भारत के क्षेत्रफल का 7.33%)

निष्कर्ष :

उपर्युक्त उतार चढ़ाव के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुचते है कि उत्तर प्रदेश का निर्माण नहीं हुआ बल्कि यह सतत् विकास का परिणाम हैं। प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में या नाम से अस्तित्व में रहा है। नए–नए राजवंश आते गये उनके साथ–साथ उत्तर प्रदेश भी विकसित होता गयाद्य राजाओं महराजाओं ने साम्राज्य विस्तार किया जिसका प्रभाव इस क्षेत्र पर भी पड़ा। पहले तो यह अवध क्षेत्र के नाम से ही जाना जाता था। मुस्लिम काल में भी अवध क्षेत्र के नाम से ही जाना जाता रहा। उत्तर मुगल काल में अवध एक स्वतंत्र राज्य बना और काफी विकास भी हुआ। नवाब आसफुद्दौला की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने अवध में सीधा हस्तक्षेप शुरू कर दिया और तरह–तरह से शोषण करने लगे। 1856 में कुशासन का आरोप लगाकर अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया और यहाँ के नवाब वाजिद अली शाह को निर्वासित करके कलकत्ता भेज दिया गया। इन्हीं कारणों से जनमानस में आक्रोश फैल गया और इसका परिणाम हुआ 1857 का स्वतंत्रता संग्राम। अवध को विद्रोहियों की जड़ तथा सैनिको की पौधशाला भी कहा गया। 1858 में रानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र से अंग्रेजों ने विलय की नीति त्याग दी। समय –समय पर इसके नामों में परिवर्तन होता रहा और इस परिवर्तन की आखिरी कड़ी के रूप में आज यह उत्तर प्रदेश के नाम से जाना जाता है । 24 जनवरी 2018 को पहली बार उत्तर प्रदेश का स्थापना दिवस मनाया गया तब से हर वर्ष 24 जनवरी को उत्तर प्रदेश दिवस मनाया जाता है।

सन्दर्भ **ग्रन्थ सूची :**

1. अवध की स्थिति– (Britanica) http://www-britanica.com
2. अवध की स्थापना– Bharat discovery .org
3. लखनऊ के नवाब– (District Lucknow)http://Lucknow-nic.in
4. उत्तर प्रदेश की संरचना अभिलेखों के सन्दर्भ में (Uttar Pradesh State Archives) uparchives.up.nic.in
5. बंदोपाध्याय शेखर, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद भारत, ओरियंटल ब्लैक स्वान नई दिल्ली, 2015
6. सरकार सुमित, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
7. चन्द्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंटल ब्लैक स्वान 2018
8. नेहरु पण्डित जवाहरलाल, मेरी कहानी सम्पूर्ण, अनुवाद हरिभाऊ उपाध्याय, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
9. शुक्ल, राम लखन, आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 2015